



**NEERAJ®**

# **भारत का इतिहास-I** **( History of India-I )**

**B.H.I.C.- 101**

**Chapter Wise Reference Book  
Including Many Solved Sample Papers**

*Based on*

**C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of**

**IGNOU.**

**& Various Central, State & Other Open Universities**

*By: Harmeet Kaur*



**NEERAJ  
PUBLICATIONS**

*(Publishers of Educational Books)*

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: [info@neerajbooks.com](mailto:info@neerajbooks.com)

Website: [www.neerajbooks.com](http://www.neerajbooks.com)

**MRP ₹ 280/-**

## Content

# भारत का इतिहास-I

## ( History of India-I )

Question Paper—June-2024 (Solved) .....	1
Question Paper—December-2023 (Solved) .....	1
Question Paper—June-2023 (Solved) .....	1
Question Paper—December-2022 (Solved) .....	1
Question Paper Exam Held in July 2022 (Solved) .....	1-2
Question Paper Exam Held in March 2022 (Solved) .....	1-2
Question Paper Exam Held in February 2021 (Solved) .....	1-2

---

<i>S.No.</i>	<i>Chapterwise Reference Book</i>	<i>Page</i>
--------------	-----------------------------------	-------------

---

### प्राचीन भारतीय इतिहास का पुनर्निर्माण ( Reconstructing Ancient Indian History )

1. भौगोलिक क्षेत्र और स्रोत ( Geographical Regions and Sources ) .....	1
2. प्रागैतिहासिक काल ( Prehistoric Period ) .....	11
3. शिकारी-संग्रहकर्ता समाज ( Hunting-Gathering Societies ) .....	20

### खाद्य उत्पादन का आगमन और हड़प्पा सभ्यता

#### ( The Advent of Food Production and Harappan Civilization )

4. नवपाषाण काल ( The Neolithic Phase ) .....	28
5. हड़प्पा सभ्यता-I ( Harappan Civilization-I ) .....	36
6. हड़प्पा सभ्यता-II ( Harappan Civilization-II ) .....	45
7. हड़प्पा सभ्यता-III ( Harappan Civilization-III ) .....	55

### वैदिक काल और संस्कृतियों में परिवर्तन ( Vedic Period and Cultures in Transition )

8. वैदिक काल-I ( Vedic Period-I ) .....	62
---	----

<i>S.No.</i>	<i>Chapterwise Reference Book</i>	<i>Page</i>
9.	वैदिक काल-II ( Vedic Period-II ) .....	69
10.	लौह का आविर्भाव ( Emergence of Iron ) .....	78
11.	बौद्धिक विकास और तपश्चर्या ( Intellectual Developments and Asceticism ) .....	87
12.	बौद्ध धर्म, जैन धर्म तथा आजिवक ( Jainism, Buddhism and Ajivikas ) .....	95

**भारत : छठी शताब्दी बी.सी.ई. से 200 बी.सी.ई. तक  
( India: 6th Century BCE to 200 BCE )**

13.	जनपद एवं महाजनपद ( Janapadas and Mahajanapadas ) .....	104
14.	उत्तर-पश्चिम में सिकंदर का आक्रमण ( Alexander's Invasion of the North-West ) .....	111
15.	मगध का उदय ( Rise of Magadha ) .....	116
16.	मौर्य साम्राज्य ( The Mauryan 'Empire' ) .....	122
17.	मौर्य ( Mauryas ) .....	130
18.	पर्यावरण के प्रति दृष्टिकोण, विज्ञान और प्रौद्योगिकी ( Attitudes towards Environment, Science and Technology ) .....	139
19.	लिंग-भेद के परिप्रेक्ष्य-प्रारंभिक भारत में स्त्रियाँ ( Gender Perspectives: Women in Early India ) .....	146



**Sample Preview  
of the  
Solved  
Sample Question  
Papers**

*Published by:*



**NEERAJ  
PUBLICATIONS**

[www.neerajbooks.com](http://www.neerajbooks.com)

# QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

भारत का इतिहास-I  
(History of India - I)

B.H.I.C.-101

समय : 3 घण्टे |

| अधिकतम अंक : 100

नोट : किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक भाग से कम-से-कम दो प्रश्न अवश्य कीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

## भाग-I

प्रश्न 1. भारत की पुरापाषाणीय संस्कृति की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं? इसके जीवन-यापन के तरीकों (subsistence patterns) पर चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-3, पृष्ठ-20, 'पुरापाषाण काल की जीवन शैली एवं अधिवास स्वरूप', पृष्ठ-22, प्रश्न 1

प्रश्न 2. हड़प्पा सभ्यता की नगर योजना, जल निकासी और वास्तुकला की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं?

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-6, पृष्ठ-45, 'आवास के प्रारूप', पृष्ठ-49, प्रश्न 4

प्रश्न 3. महापाषाणीय संस्कृति क्या है? इसके प्रकारों पर चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-10, पृष्ठ-79, 'महापाषाण संस्कृति'

प्रश्न 4. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए-

(क) हड़प्पा सभ्यता का पतन

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-7, पृष्ठ-55, 'हड़प्पा सभ्यता का हास : पुरातात्विक साक्ष्य', 'आकस्मिक हास के सिद्धांत'

(ख) उत्तर-वैदिक (Later Vedic) राजव्यवस्था

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-9, पृष्ठ-70, 'राजनीतिक व्यवस्था और समाज'

(ग) बुद्ध की शिक्षाएँ

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-12, पृष्ठ-96, 'बुद्ध के उपदेश'

(घ) मगध का उदय

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-15, पृष्ठ-118, प्रश्न 2

## भाग-II

प्रश्न 5. अशोक की धम्म नीति की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं?

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-17, पृष्ठ-134, प्रश्न 1, पृष्ठ-135, प्रश्न 2

प्रश्न 6. मौर्य साम्राज्य के विघटन के क्या कारण थे?

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-17, पृष्ठ-133, 'साम्राज्य का विघटन'

प्रश्न 7. प्राचीन भारत में महिलाओं की क्या स्थिति थी?

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-19, पृष्ठ-149, प्रश्न 3

प्रश्न 8. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए-

(क) सप्तांग का सिद्धांत

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-16, पृष्ठ-127, प्रश्न 4

(ख) मेगस्थनीज

उत्तर-इंडिका ग्रीक लेखक मेगस्थनीज द्वारा लिखित मौर्य भारत का लेखा-जोखा है। मेगस्थनीज की इंडिका का बाद के लेखकों द्वारा सीधे उद्धरण या व्याख्या के रूप में संरक्षित भागों का उपयोग करके पुनर्निर्माण किया जा सकता है। मूल पाठ से संबंधित भागों को समान सामग्री, शब्दावली और वाक्यांशों के आधार पर बाद के कार्यों से पहचाना जा सकता है, भले ही सामग्री मेगस्थनीज को स्पष्ट रूप से जिम्मेदार नहीं ठहराया गया हो।

ई. श्वानबेक ने मेगस्थनीज के कई अंशों का पता लगाया और उनके संग्रह के आधार पर, जॉन वाटसन मैकक्रिंडल ने 1887 में इंडिका का एक पुनर्निर्मित संस्करण प्रकाशित किया। हालांकि, यह पुनर्निर्माण सार्वभौमिक रूप से स्वीकार नहीं किया गया है। श्वानबेक और मैकक्रिंडल ने पहली शताब्दी ईसा पूर्व के लेखक डियोडोरस के लेखन में मेगस्थनीज को कई अंशों का श्रेय दिया। हालांकि, स्ट्रैबो के विपरीत, डियोडोरस मेगस्थनीज का एक बार भी उल्लेख नहीं करता है, जो मेगस्थनीज को अपने स्रोतों में से एक के रूप में स्पष्ट रूप से उल्लेख करता है। मेगस्थनीज और डियोडोरस के वृत्तान्तों के बीच कई अंतर हैं-उदाहरण के लिए, डियोडोरस ने भारत को 28,000 स्टेडियमों के रूप में वर्णित किया है। (लगभग 5,000 किमी, 3,000 मील) पूर्व से पश्चिम तक लंबा; मेगस्थनीज इस संख्या को 16,000 (3,000 किमी, 2,000 मील) के रूप में देता है। डियोडोरस का कहना है कि नील नदी के बाद सिंधु दुनिया की सबसे बड़ी नदी हो सकती है; मेगस्थनीज (एरियन द्वारा उद्धृत) कहता है कि गंगा नील नदी से बहुत बड़ी है। इतिहासकार आरसी मजूमदार बताते हैं कि मैकक्रिंडल के संस्करण में मेगस्थनीज के लिए जिम्मेदार टुकड़े I और II एक ही स्रोत से उत्पन्न नहीं हो सकते हैं क्योंकि खंड I नील नदी को सिंधु से बड़ा बताता है, जबकि टुकड़ा II सिंधु को नील और डेन्यूब से अधिक लंबा बताता है।

(ग) अर्थशास्त्र

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-16, पृष्ठ-123, 'अर्थशास्त्र और सप्तांग सिद्धांत'

(घ) प्राचीन भारत में धातु विज्ञान (Metallurgy)

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-18, पृष्ठ-142, 'धातु शोधन में प्रगति'

# QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

भारत का इतिहास-I  
(History of India - I)

B.H.I.C.-101

समय : 3 घण्टे ]

[ अधिकतम अंक : 100

नोट : किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक भाग से कम-से-कम दो प्रश्न अवश्य कीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

## भाग-I

प्रश्न 1. प्राचीन भारतीय इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए पुरातात्विक स्रोतों के महत्त्व पर चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-1, पृष्ठ-7, प्रश्न 4

प्रश्न 2. आप 'नवपाषाणीय' पारिभाषिक क्रांति को किस प्रकार परिभाषित करेंगे? नवपाषाणीय क्रांति की अवधारणा की विस्तार से चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-4, पृष्ठ-28, 'नवपाषाण संस्कृति' पृष्ठ-31, प्रश्न 1

प्रश्न 3. उत्तर-वैदिक (Later Vedic) काल में अर्थव्यवस्था, राजव्यवस्था और समाज में हुए परिवर्तनों पर चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-9, पृष्ठ-69, 'अर्थव्यवस्था की प्रकृति', पृष्ठ-70, 'राजनीतिक व्यवस्था और समाज'

प्रश्न 4. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए-

(क) प्राचीन भारतीय इतिहास में विदेशी वृत्तांतों का महत्त्व

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-1, पृष्ठ-9, प्रश्न 2

(ख) हड़प्पा सभ्यता में अर्थव्यवस्था

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-6, पृष्ठ-46, 'अर्थव्यवस्था'

(ग) आजीवक पंथ (Ajivikas)

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-12, पृष्ठ-100, प्रश्न 3

(घ) 16 महाजनपद

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-13, पृष्ठ-104, 'मुखियातंत्र से राज्य तक : जनपद, महाजनपद, गणसंघ'

## भाग-II

प्रश्न 5. भारत पर सिकंदर (Alexander) के आक्रमण पर चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-14, पृष्ठ-113, प्रश्न 2

प्रश्न 6. मौर्य प्रशासन की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-16, पृष्ठ-124, 'प्रशासन'

प्रश्न 7. लिंग अध्ययन (Gender studies) का क्या महत्त्व है? प्राचीन भारत में महिलाओं की स्थिति पर एक विस्तृत लेख लिखिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-19, पृष्ठ-149, प्रश्न 3, प्रश्न 4

प्रश्न 8. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए-

(क) छठी शताब्दी बी.सी.ई. में बुद्ध धर्म तथा जैन धर्म के उदय के वस्तुगत (Material) कारण

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-12, पृष्ठ-96, 'बौद्ध मत का विकास', पृष्ठ-98, 'जैन धर्म का विकास'

(ख) लौह धातु की उत्पत्ति

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-10, पृष्ठ-78, 'लौह प्रौद्योगिकी की शुरुआत'

(ग) भारतीय दर्शन की छः प्रणालियाँ

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-11, पृष्ठ-91, प्रश्न 3

(घ) प्राचीन भारत में जल विज्ञान (Hydrology)

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-18, पृष्ठ-140, 'प्राचीन भारत में जल विज्ञान'



# **Sample Preview of The Chapter**

*Published by:*



**NEERAJ  
PUBLICATIONS**

[www.neerajbooks.com](http://www.neerajbooks.com)

# भारत का इतिहास-I

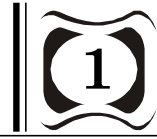
## ( History of India-I )

### प्राचीन भारतीय इतिहास का पुनर्निर्माण

#### ( Reconstructing Ancient Indian History )

### भौगोलिक क्षेत्र और स्रोत

#### ( Geographical Regions and Sources )



#### परिचय

भारत के ऐतिहासिक अध्ययन में देश की भौतिक विशेषताएँ काफी महत्वपूर्ण मानी गई हैं, इसलिए इतिहास में मानव जाति और पर्यावरण दोनों का इतिहास शामिल है। मानव जाति का इतिहास और पर्यावरण का इतिहास एक-दूसरे को प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं। हालांकि दोनों को अलग करना कठिन माना गया है क्योंकि मनुष्य और प्रकृति का संबंध प्राचीन काल से है। पर्यावरण में विभिन्न प्रकार की विविध परिस्थितियाँ पाई गई हैं। पर्यावरण का अर्थ विशेष रूप से लोगों के जीवन को प्रभावित करने वाला भौतिक परिवेश माना गया है क्योंकि प्राकृतिक तत्व मानव समाज को गहन रूप से प्रभावित करते हैं। प्राचीन भारतीय इतिहास के पुनर्निर्माण हेतु विभिन्न प्रकार के स्रोत और उनसे संबंधित समस्याएँ पाई गई हैं। ये स्रोत साहित्यिक, पुरातात्विक और विदेशी वृत्तान्त माने गए हैं।

#### अध्याय का विहंगावलोकन

##### भौगोलिक क्षेत्र

भारत के विभिन्न हिस्सों की स्थलाकृति में दिखाई देने वाली भिन्नताओं से परिचय कराना भौतिक विशेषताओं का उद्देश्य माना गया है। भू-आकृतिक विशेषताओं के आधार पर उपमहाद्वीप के तीन मुख्य भाग हैं—

1. हिमालय का पर्वतीय प्रदेश।
2. सिंधु-गंगा का मैदान।
3. प्रायद्वीपीय भारत।

हिमालय पर्वत पृथ्वी की सबसे बड़ी पर्वत श्रृंखला है, जिससे बर्फ पिघने से तीन बड़ी नदियों में लगतार जल का प्रवाह बना रहता है, जैसे कि सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र।

भारतीय उपमहाद्वीप की पहली सभ्यता का विकास सिंधु के मैदानों में और पहली सहस्राब्दी बी.सी.ई. से साम्राज्य संबंधी ढाँचे का विकास गंगा के मैदानों में हुआ।

उत्तर के मैदानों और प्रायद्वीपीय भारत को मध्य भारत कहा गया है। मध्यवर्ती क्षेत्र लगभग गुजरात से लेकर पश्चिमी उड़ीसा तक लगभग 1600 किलोमीटर तक फैला हुआ है। मध्यवर्ती क्षेत्र के दक्षिणी सिरे पर शुरू होने वाली भू-रचना प्रायद्वीपीय भारत कहलाती है। महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी चार नदियाँ बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं। सांस्कृतिक विकास धारा यहीं से शुरू होकर आधुनिक काल तक लगातार प्रवाह में है।

नर्मदा और ताप्ती नदियों का प्रवाह पश्चिम की ओर है; यह गुजरात के अरब सागर में गिरती हैं। दक्कन का पठार उत्तर में विंध्य पर्वत श्रृंखलाओं से लेकर कर्नाटक की दक्षिणी सीमाओं तक विस्तारित है। महाराष्ट्र और मध्य भारत के भू-भागों की काली मिट्टी में कपास, ज्वार, मूँगफली और तिलहन को फसल के साथ प्रारंभिक कृषि संस्कृतियों का उद्भव भी इसी क्षेत्र में माना गया है।

##### विशिष्ट प्रमुख भौगोलिक इकाइयाँ

विशिष्ट प्रमुख भौगोलिक इकाइयाँ इस प्रकार हैं—

हिमालय और पश्चिमी सीमा प्रदेश—हिमालय पर्वतों के तीन मुख्य भाग हैं—

- पूर्वी हिमालय,
- पश्चिमी हिमालय और
- मध्यवर्ती हिमालय।

पूर्वी हिमालय पर्वत श्रृंखला पर प्रागैतिहासिक और ऐतिहासिक युगों में दक्षिण-पूर्व एशिया और दक्षिण चीन से सांस्कृतिक प्रभाव आना शुरू हुआ। मध्यवर्ती हिमालय पर्वत श्रृंखला भूटान से हिमालय तक विस्तारित होकर तिब्बत के पठार की सीमा तक मानी गई है। पश्चिमी पर्वत श्रृंखला दक्षिण पश्चिम से अफगानिस्तान तक फैली मानी गई है, परंतु पूर्वी हिमालय पर्वत की श्रृंखला जो कि ब्रह्मपुत्र के पूर्व में उत्तर-दक्षिण दिशा में असम से लेकर चीन तक विस्तारित है, की तरह भौगोलिक और सांस्कृतिक रूप से पश्चिमी अफगानिस्तान का ईरान से गहरा संबंध रहा है। नवपाषाण काल से यह सांस्कृतिक रूप से भारतीय उपमहाद्वीप के पास रहा है। ईरान और भारत के बीच व्यापार मार्ग और मध्य एशिया से



भारत के मैदानों को आपस में जोड़ते हैं क्योंकि इन्हीं के माध्यम से व्यापार, हमलावर और सांस्कृतिक प्रभाव भारत में प्रवेश करते रहे हैं। इस प्रकार ऐतिहासिक रूप से अफगानिस्तान और बलूचिस्तान के पहाड़ी क्षेत्र महत्वपूर्ण सीमांत क्षेत्र माने गए हैं।

**सिंधु के मैदान**—सिंधु के उपजाऊ मैदानी क्षेत्र के दो भाग हैं—पंजाब तथा सिंधु।

पंजाब का अर्थ पाँच नदियों की भूमि, अर्थात् रावी, व्यास, चेनाब, झेलम और सतलुज। इस क्षेत्र को उपमहाद्वीप का बहुधान्य प्रदेश माना गया है। यहाँ विभिन्न संस्कृतियाँ पाई गई हैं।

सिंधु प्रदेश में चावल और गेहूँ की खेती होती है। यहाँ भारतीय उपमहाद्वीप की पहली नगरीय संस्कृति का उद्भव हुआ। हड़प्पा नगर पंजाब (पाकिस्तान) और मोहनजोदड़ो सिंध में स्थित हैं।

**गांगेय उत्तरी भारत**—गंगा क्षेत्र के तीन उपक्षेत्र हैं—ऊपरी क्षेत्र, मध्य क्षेत्र तथा निचला क्षेत्र।

ऊपरी क्षेत्र में दोआब का क्षेत्र हड़प्पा संस्कृति का क्षेत्र माना गया है। यह क्षेत्र चित्रित संस्कृति का केंद्र और उत्तर वैदिक काल में सांस्कृतिक संघर्ष केंद्र भी रहा है। गांगेय मैदान का मध्य क्षेत्र पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार तक फैला होने के कारण यह नगरीय जीवन, मौद्रिक अर्थव्यवस्था और व्यापार का केंद्र रहा है। राजनीतिक दृष्टि से यह प्रदेश मौर्य साम्राज्य को विस्तारित कर गुप्तकाल तक महत्वपूर्ण प्रदेश माना गया। गांगेय मैदान का निचला क्षेत्र बंगाल राज्य तक फैला हुआ है, जो कि कछारी मिट्टी से बना है। यह क्षेत्र उपज की अपेक्षा घनी आबादी वाला क्षेत्र माना गया है। यह सहस्राब्दी बीसीई से भारतीय सभ्यता का मुख्य केंद्र माना गया है। यह क्षेत्र सांस्कृतिक रूप से असम, बंगाल और ऐतिहासिक विकास की दृष्टि से उड़ीसा की तरह है। असम घाटी 600 किलोमीटर से अधिक क्षेत्र में फैली हुई है।

**पूर्वी, पश्चिमी और मध्य भारत**—दक्षिण-पूर्वी भाग मालवा उपक्षेत्र का भिन्न प्रकार का अंग है। यहाँ उपजाऊ मिट्टी के कारण सिंचाई के अभाव के बावजूद यह अच्छी फसलों का माध्यम है। भौगोलिक दृष्टि से इस क्षेत्र को हड़प्पा कालीन समुदायों, मध्य भारत और ताम्र पाषाणकालीन समुदायों का सुगम स्थान माना गया है। मध्य भारतीय क्षेत्र में गुप्त काल से ही भारतीय समाज के जाति-कृषक आधार वाली संरचना से जुड़ते रहे। इसमें आदिवासी क्षेत्र पाए गए, जैसे कि दक्षिण बिहार, पश्चिम उड़ीसा और पूर्वी मध्य प्रदेश के आदिवासी क्षेत्र। गुजरात मध्य भारत क्षेत्र के पश्चिमी किनारे पर सौराष्ट्र, अनर्त और लाट में प्राकृतिक तौर पर बंटा हुआ है। यहाँ हड़प्पा कालीन समय से प्राचीन बस्तियाँ रही हैं। यह 4000 वर्षों से ज्यादा समय से तटीय और विदेशी व्यापार का केंद्र रहा है। यहाँ के तटवर्ती मैदान, जो कि दक्षिण-पश्चिम उड़ीसा में हैं, सामाजिक सांस्कृतिक विकास का केंद्र माने गए हैं क्योंकि यहाँ से उड़ीसा द्वारा अपनी भाषाई और सांस्कृतिक पहचान बनाई गई।

**प्रायद्वीपीय भारत**—प्रायद्वीपीय चार राज्यों—महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और कर्नाटक में बंटा है क्योंकि इनके द्वारा दक्कन का पठार भी दर्शाया गया है। आंध्र प्रारंभिक नवपाषाण युगीन लोगों द्वारा पशुचारण और दक्कन ताम्र-पाषाण युगीन मानव समुदायों द्वारा कृषि को अपनाया गया।

**सुदूर दक्षिण**—इस क्षेत्र के प्राचीनतम साहित्य में पारिस्थितिक विविधताओं को दर्शाया गया है क्योंकि यहाँ मौसमी नदियाँ होने से किसान सिंचाई हेतु तालाबों पर निर्भर रहते हैं। इस क्षेत्र का अधिकेंद्र कावेरी का मैदान माना गया है। पश्चिमी तटवर्ती मैदान केरल तक विस्तारित है। यहाँ धान, काली मिर्च, मसाले और अन्य फसलें उगाई जाती हैं, इसीलिए उत्तर-मौर्य काल से केरल मसालों का व्यापार करता रहा है।

**ऐतिहासिक क्षेत्रों के उदय की असमान प्रक्रियाएँ**

ऐतिहासिक क्षेत्रों के उदय की प्रक्रियाएँ सांस्कृतिक और भौगोलिक रूप से सभी क्षेत्रों में असमान रही हैं। यह माना गया है कि तीसरी सहस्राब्दी बी.सी.ई. के उत्तरार्द्ध में गुजरात के मध्य पाषाण युगीन संस्कृति, दक्षिण क्षेत्रों में नवपाषाण युगीन पशुपालक तथा अन्य क्षेत्रों में हड़प्पा सभ्यता इन संस्कृतियों में ही मौजूद थी। इस प्रकार विभिन्न क्षेत्रों में सांस्कृतिक विकास विभिन्न प्रकार से पाया गया, जो कि एक-दूसरे को प्रभावित करता था। आबादी के आधार पर भी सभी क्षेत्र असमान रूप से रहे, इसलिए सभ्यता और संस्कृति विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न कालों के अनुसार पाई गई।

**क्षेत्रों की प्रकृति**

क्षेत्रों की प्रकृति के अनुसार वर्गीकृत किया गया है। कुछ क्षेत्र चिरस्थायी और शक्तिशाली राज्यों की अपेक्षा कम शक्तिशाली थे। जैसे कि गंगा, गोदावरी, महानदी, कृष्णा, कावेरी जैसी प्रमुख नदियों के कारण शक्तिशाली केंद्र बने। इसका ऐतिहासिक कारण कुछ क्षेत्र का विस्तारित होना माना गया क्योंकि भीलों का देश, बस्तर एवं राजमहल की पहाड़ियाँ बस्तियों की संरचना, कृषिगत इतिहास, राज्य प्रणाली आदि से कुछ क्षेत्र केन्द्रीय दृष्टि से अलग पाए गए। इस प्रकार एक कारक का दूसरी श्रेणी में परिवर्तित होना संभव था। पर्यावरण और सामाजिक व्यवस्था के बीच सक्रिय संपर्क को हड़प्पा सभ्यता के पारिस्थितिक पतन का कारण माना गया है। हड़प्पा सभ्यता के विस्तृत क्षेत्र में गेहूँ, जौ, मसूर, चावल, दालों जैसी वर्षा ऋतु की फसलें उगानी शुरू हुईं। साथ ही व्यापार, कारीगरी और वस्तु आदान-प्रदान शुरू हुआ। यह सिंधु घाटी की सभ्यता का प्रथम साधन माना गया, परंतु कुछ प्राकृतिक कारणों से सिंधु सभ्यता का पतन हुआ जैसे कि सिंधु नदी में बाढ़, जलवायु परिवर्तन, नदियों का सूखना और वनस्पति आवरण का हास आदि। इस पारिस्थितिक असंतुलन के कारण हड़प्पावासियों ने बेहतर निर्वाह के लिए इन क्षेत्रों को छोड़कर दूसरी जगह पलायन किया।

**प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन के स्रोत**

इतिहास के लेखन में स्रोत को महत्वपूर्ण माना गया है। इसकी तीन श्रेणियाँ इस प्रकार हैं—साहित्यिक, पुरातात्विक तथा विदेशी वृत्तों।

साहित्यिक स्रोतों के अंतर्गत वैदिक, बौद्ध, जैन साहित्य, महाकाव्य, पुराण, संगम साहित्य, प्राचीन जीवनियाँ, कविता और नाटक हैं। पुरातात्विक के तहत पुरातात्विक अन्वेषणों द्वारा पुरालेखों, मुद्राओं और स्थापत्य पुरातात्विक अवशेष आते हैं, जैसे कि मंदिर के अवशेष, सिक्के, घर के अवशेष, खंभों के गड्डे, मिट्टी के बर्तन, कोष्ठागार आदि। भारतीय इतिहास के प्रागैतिहासिक और आद्य-ऐतिहासिक काल की अपेक्षा प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक काल में पुरातात्विक तत्वों का काफी महत्व माना गया।

प्राथमिक स्रोतों के रूप में मौजूद हैं पुरातात्विक अवशेषों पर शिलालेख। द्वितीयक स्रोतों में शोधकर्त्ताओं द्वारा उपयोग किये जाने वाले लेखों, किताबों या लिखित इतिहास आते हैं।

द्वितीयक स्रोत दो प्रकार के हैं—शिलालेख/पांडुलिपियां तथा प्रकाशित सामग्री।

प्राचीन ग्रंथों के अध्ययन में महत्वपूर्ण पहलुओं पर ध्यान देना आवश्यक है। उपिंदर सिंह का मानना है कि ऐतिहासिक स्रोत के रूप में विशेष अवधि के अंतर्गत एक ग्रंथ की रचना का उपयोग कम समस्यापूर्ण है। यदि इसकी रचना दीर्घकाल तक चलती है तो उस काल का निर्धारण करना जटिल कार्य हो जाता है, जैसे कि महाभारत और रामायण महाकाव्य आदि क्योंकि इन ग्रंथों में विभिन्न पांडुलिपियों द्वारा उनके मूल को पहचानने में सहायता मिली है। इस प्रकार एक ग्रंथ एक आदर्श का प्रतिनिधित्व कर सकता है। हालांकि इनमें मिथक भी पाए गए हैं, जिनके द्वारा हम ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

### साहित्यिक स्रोत

साहित्यिक स्रोतों में भारतीय साहित्य धर्म, ब्रह्मांड विज्ञान, जादू, अनुष्ठान, प्रार्थनाओं तथा पौराणिक कथाएँ, वेद, उपनिषद, ब्राह्मण साहित्य, सूत्र, पुराण आदि को शामिल किया गया है। इनका वर्णन इस प्रकार से है—

**वेद**—वेद शब्द संयुक्त मूल के 'विद्' शब्द का अर्थ जानना, अर्थात् ज्ञान माना गया है। वेद वैदिक साहित्य का मौखिक रूप है, इसे तीन रूपों में विभाजित किया जा सकता है।

**संहिता या संग्रह**—ब्राह्मण, आरण्य और उपनिषद।

**संहिता**—संहिता या संग्रह को भजन, प्रार्थना, विसंगति, द्वंद्ववार, बलिदान के सूत्र और बाद-विवाद माना गया है।

ऋग्वेद संहिता में प्रशंसा के गीतों का ज्ञान है। अथर्ववेद व संहिता में गीतों या धुनों का ज्ञान है और यजुर्वेद संहिता में यज्ञीय सूत्रों को शामिल किया गया है। सामवेद संहिता में गीतों या धुनों की जानकारी है।

**ब्राह्मण**—इसमें बलिदान पर टिप्पणियाँ, संस्कार व समारोहों का व्यावहारिक या रहस्यमयी महत्व पाया गया है।

**आरण्यक और उपनिषद**—इसमें भगवान, संसार, मानव जाति पर तपस्वियों और संन्यासियों के कथन शामिल किये गये हैं। ऋग्वेद भारत का सबसे प्राचीन ग्रंथ है, इसमें 10 पुस्तकें हैं। इसकी रचना 1500-1000 बी.सी.ई. में की गई है। प्रारंभिक काल से 2 से 7 और उत्तर वैदिक काल में 1, 8, 9, 10 पुस्तकें शामिल हैं, जो कि 1000-500 बी.सी.ई. के बीच मानी गई हैं। इसमें एक पशुपालन, पूर्व-वर्ग समाज के उत्तर वैदिक काल के कृषक, जाति समाजों का वर्गीकरण और राजनीतिक क्षेत्रों के निर्माण जैसी गतिविधियों की जानकारी मिली है।

सूत्र ग्रंथों की एक और श्रेणी है, जिसमें महान ऋषियों द्वारा रचे हुए संस्करण हैं। इनमें शामिल हैं—

श्रौतसूत्र में महान बलिदान के नियम, गृहसूत्र में दैनिक जीवन के बलिदानों के दिशा-निर्देश और धर्म सूत्र में कानून पुस्तकें शामिल हैं।

समृति ग्रंथ को 200 बी.सी.ई. और 900 सी.ई. के बीच रचा माना गया है, इसमें विभिन्न वर्ण और अधिकारियों और राजाओं के कर्त्तव्यों का वर्णन मिलता है।

**कौटिल्य का अर्थशास्त्र**—15 पुस्तकों के साथ यह कानूनी ग्रंथ है, जिसमें मौर्य काल की स्थिति राजनीतिक और अर्थव्यवस्था से संबंधित जानकारी है।

**महाकाव्य**—यह रामायण और महाभारत की दसवीं-चौथी शताब्दी बी.सी.ई. की स्थिति को दर्शाता है। रामायण और महाभारत को ऐतिहासिक स्रोत माना गया है, जो कि मौर्य और गुप्त काल से संबंधित है। दोनों महाकाव्य धार्मिक संप्रदायों के बारे में जानकारी देते हैं। ब्रह्मऋषि बाल्मीकि की रामायण अधिक एकीकृत मानी गई है।

**पुराण**—यह 18 महापुराण और कई उपपुराणों का संकलन है, जो 400 बी.सी.ई. तक पूरा हो गया था। इस पुराण को व्यास द्वारा लिखित हिंदू ग्रंथों की श्रेणी माना गया है। इसमें विषय हैं—सर्ग, प्रतिसर्ग, मन्वंतर, वंश, वंशानुचरित।

पुराणों में वायु, ब्रह्मांड, ब्रह्मा, हरिवंश, मत्स्य, विष्णु आदि में प्राचीन जानकारी मिलती है। पुराणों में गुप्त राज्यों के जीवन और वंश की सामग्री मिलती है। चौथी-छठी शताब्दी सी.ई. के दौरान इनकी रचना की गई। बाद में भागवत पुराण और स्कंद पुराण को भी शामिल किया गया। पुराण नदियों, झीलों, पहाड़ों, यानी हमें भौगोलिक जानकारी प्रदान करते हैं। इनके द्वारा हिंदू धर्म के संप्रदायों की जानकारी मिलती है, जैसे कि शैववाद, वैष्णववाद और शक्तिवाद। यह विभिन्न पंथों की जानकारी देते हैं, जिसमें गणपति, कृष्ण, ब्रह्मा, शिव और अन्य भी शामिल हैं।

**संगम साहित्य**—संगम साहित्य में सर्वप्रथम तमिल ग्रंथ संकलित हैं। इसमें लंबी कविता, संग्रह गोष्ठियाँ आदि का संकलन है, जिसे संगम साहित्य कहा गया। संगम साहित्य 400 बी.सी.ई. शताब्दी और 200 सी.ई. के बीच संकलित हुए माना गया। तीन संगम यानी सम्मेलन हुए, पहला और तीसरा मदुरै में तथा दूसरा कपाटपुरम में हुआ। इनका विषय प्रेम और युद्ध है, जो कि पहले मौखिक रूप में पाया गया। इसमें सभी वर्गों द्वारा उच्चतम गुणवत्ता के साहित्य का प्रतिनिधित्व किया गया। संगम साहित्य में उस समय के भाटों, योद्धाओं, सैन्य कारनामों, राजाओं के बारे में तथा शहरी व्यापारी वर्ग की जानकारी मिलती है।

**जीवन-वृत्तांत कविता और नाटक**—अश्वघोष और भाष द्वारा इनकी रचना की गई, जिसमें शामिल हैं—बुद्ध बहुचरित, सारिपुत्र कृष्ण और सौन्दरानंद और भाष और पंचरात्र, दत्तवाक्य, बालचरित और स्वप्न वासवदत्ता नाटक लिखे गये। कालिदास द्वारा विभिन्न प्रकार की काव्य कृतियों को लिखा गया, जिसमें गुप्त वंश के शासनकाल का वर्णन मिलता है। विशाखदत्त द्वारा मुद्राराक्षस, देवीचंद्रगुप्तम्, पंचतंत्र और कथा सरितसागर आदि में लोक कथाओं का वर्णन मिलता है। इसमें उस समय के राजाओं की जीवनियाँ भी मिलती हैं, जैसे कि बाणभट्ट का हर्षचरित और बिल्हण का विक्रमाकदेवचरित् आदि।

**बौद्ध और जैन साहित्य**—बौद्ध और जैन साहित्य को गैर-ब्राह्मणवादी और गैर-संस्कृति स्रोत माना गया है, जो पालि और प्राकृत भाषाओं में है। त्रिपिटकों में बौद्ध के जीवन और 16 महाजनपदों की जानकारी मिलती है। इसकी तीन किताबें हैं—

सुत्तपिटक, विनय पिटक और अभिधम्म पिटक। सुत्तपिटक में बुद्ध के प्रवचन, विनय पिटक में भिक्षुओं के लिए 227 नियम और

विनिमय 386 बीसीई में शामिल किए गए। अभिधम्म पिटक बौद्ध दर्शन से संबंधित है। सुत्तपिटक में पाँच निकाय शामिल हैं, जिसमें खुद्दक निकाय प्रवचनों का संग्रह माना गया है। थेरगाथा में ज्येष्ठ बौद्ध भिक्षुओं की कविताएँ और थोरोगाथम में ज्येष्ठ बौद्ध भिक्षुणियों की कविताएँ शामिल हैं। स्थूलभद्र द्वारा 12 अंगों में जैन साहित्य का पुनर्निर्माण किया गया और 5वीं शताब्दी सी.ई. का श्वेताबर द्वारा स्वीकृत शास्त्र इसमें हैं—12 अंग, 12 उपांग, 10 प्रकर्ण, 6 चेदसूत्र, 2 सूत्र तथा 4 मूल सूत्र।

ये आचार संहिता विभिन्न किंवदंतियों, जैन सिद्धांतों और तत्वमीमांसा की जानकारी देते हैं।

प्राचीन भारतीय साहित्य ज्यादातर धार्मिक प्रवृत्ति के हैं। इनके द्वारा विभिन्न समाजों द्वारा अलग-अलग तरीकों से ऐतिहासिक चेतना को एकीकृत किया। रोमिला थापर के अनुसार इसे इतिहास पुराण परंपरा कहा जाता है क्योंकि यह चेतना का एक अंतर्निहित रूप है, जो ग्रंथों द्वारा पता चलता है। इसमें मूल मिथक, प्राचीन वंश समूहों के नायकों या वंशावली की प्रशंसा में रचनाएँ शामिल की गई हैं।

#### पुरातत्व

पुरातत्व के अतीत को समझने के लिए निम्नलिखित का अध्ययन करना आवश्यक है। मूर्तियाँ, मिट्टी के बर्तन, हड्डियों के टुकड़े, घर के मंदिर के अवशेष, अनाज, सिक्के मुहरें, शिलालेख आदि।

इनके द्वारा प्रागैतिहासिक काल, आद्य ऐतिहासिक काल का अध्ययन किया जा सकता है क्योंकि इनके लिखित प्रमाण हैं, जो अवधियों के लिए महत्वपूर्ण माने गए हैं, जैसे—इंडो-ग्रीक के इतिहास के सिक्के।

उत्खनन और अन्वेषण के माध्यम से विभिन्न प्रकार के कालों की विभिन्न प्रकार की दत्त सामग्री मिलती है, जैसे कि हड़प्पा लिपि की जानकारी इन्हीं के माध्यम से प्राप्त की गई।

**सिक्के**—सिक्के के अध्ययन को मुद्राशास्त्र कहा गया है क्योंकि यह एक धातु मुद्रा, निश्चित आकार और वजन मानक है, इसलिए इस पर जारी करने वाले प्राधिकरण की मुहर और अन्य जानकारी मिलती है। पुरातत्व के रूप में कई शहरों, राज्यों में तांबे, चाँदी, सोने और सीसे के सिक्के और पकी मिट्टी से बने सिक्कों के साँचे पाए गए, जो कि उस समय के समूह वाणिज्य को दर्शाते हैं। सिक्कों पर उस समय के राजाओं, देवताओं तिथियों, उनके नामों और काल का उल्लेख मिलता है। समुद्री व्यापार में भी सिक्कों की महत्वपूर्ण भूमिका मानी गई है। मौर्य काल में सिक्के सीसा, पोटिन, ताँबा, कांस्य, चाँदी और सोने के बने थे। सिक्कों पर समुद्रगुप्त और कुमारगुप्त आदि राजाओं को वीणा बजाते दिखाया गया है। सिक्कों को दिनार के रूप में भी जाना गया, यानी सिक्कों से जीवन के हर पहलू की जानकारी मिलती है। गुप्तोत्तर काल में सिक्कों में खोट और कोड़ियों के बढ़ते उपयोग के कारण व्यापार और वाणिज्य में गिरावट की ओर इशारा करता है।

**शिलालेख**—शिलालेख का अध्ययन पुरालेखशास्त्र कहलाता है। शिलालेख का माध्यम मुहरें, ताँबे की पलेट, मंदिर की दीवार, लकड़ी के टुकड़े, पत्थर के खंभे, चट्टान की सतह तथा ईंटें माना गया है। अशोक के शिलालेख जो कि चट्टान की सतह और पत्थर

के स्तंभों पर 1837 में जेम्स प्रिंसेप द्वारा पड़े गए। इनकी लिपि ब्राह्मी व खरोष्ठी है। संस्कृति का पहला शिलालेख लगभग पहली शताब्दी बी.सी.ई. का मिलता है। अशोक का लुम्बिनी स्तंभलेख एक स्मारक शिलालेख माना गया। सती तथा नायक अभिलेख मिले। इसके अलावा भूमि अनुदानों पर आधारित कई हजार अभिलेख मिले। शिलालेख संरक्षकों की प्रशंसा में लिखे गये थे, जैसे कि हाथीगुम्फा शिलालेख, स्तंभ शिलालेख और अन्य शिलालेख। शिलालेखों द्वारा बाघ, जलाशय, टैंक और धर्मार्थ भोजन के अलावा भित्तिचित्र, धार्मिक सूत्र और मुहरों पर लेखन कार्य किया गया। इस प्रकार यह हमारे लिए मूल्यवान है क्योंकि अभिलेख हमारे राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक इतिहास के अच्छा स्रोत माने गये। शिलालेखों द्वारा राजस्व प्रणालियों, वंशावली और कृषि विवरण का पता चलता है। ये हमें मूर्तियों की तिथियों, धार्मिक संप्रदायों जो विलुप्त हो रहे, उनके बारे में बताते हैं। ये ज्यादातर धार्मिक न होकर इतिहास की अन्य जानकारियाँ भी देते हैं, जैसे कि संगीत कला, वास्तुकला, साहित्य, भूगोल, भाषाएँ और मूर्तिकला आदि।

#### विदेशी वृत्त

भारत में विदेशियों के रूप में कई आंगतुक, व्यापारियों, उपनिवेशों, सैनिकों और राजदूतों के रूप में आए। जैसे कि यूनानी लेखक सैंड्रोकोटस के उल्लेख में सिकंदर और 18वीं शताब्दी के विलियम जोन्स द्वारा चंद्रगुप्त मौर्य के रूप में पहचान की गई। अन्य विदेशी जैसे कि सेल्यूकस के दूत द्वारा मैगस्थनीज ने इंडिका में वर्णन, ग्रीक और रोमन यात्रियों द्वारा हिंद महासागर में व्यापार का वर्णन आदि। पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रिन सी. और टॉलेमी का जियोग्रासी और स्ट्रेबो, एशियन, प्लिनी व एल्डर के विवरणों से भारतीय समुद्री मार्ग का पता चलता है। चीनी यात्रियों द्वारा पवित्र स्थानों और बौद्ध स्थानों और बौद्ध मंदिरों के दौरे का वर्णन मिलता है, जैसे कि फान्हायान, हवेन-त्सांग द्वारा 399-414 बी.सी.ई. और 639 सी.ई. में भारत की यात्रा की गई। इसी प्रकार अरब यात्रियों में अबू रिहान द्वारा उनकी रचना तहकीक-ए-हिन्द एक विश्वकोष लिखा गया, जिसमें भारतीयों के सभी पहलुओं को शामिल किया गया। अरब यात्री सुलेमान द्वारा भी अपने विवरण में भारत का उल्लेख किया गया। 11वीं शताब्दी का मूल्यवान स्रोत अल बरूनी यानी अबू रिहान द्वारा दिया गया।

### बोध प्रश्न

**प्रश्न 1. भारत के तीन प्रमुख भू-आकृतिक क्षेत्रों की चर्चा करें।**

उत्तर—भारत के तीन प्रमुख भू-आकृतिक क्षेत्र हैं—

1. हिमालय के पर्वतीय प्रदेश,
2. सिंधु गंगा के मैदान,
3. प्रायद्वीपीय भारत।

**1. हिमालय के पर्वतीय प्रदेश**—हिमालय पर्वत को पृथ्वी की सबसे ऊँची पर्वत श्रृंखला माना गया है। यह पर्वतीय धाराओं द्वारा भूमि कटाव के कारण कछारी मिट्टी में लगातार प्रवाह से मैदानी क्षेत्रों में पाई गई है क्योंकि हिमालय की बर्फ पिघलती रहती है, इसलिए इससे तीन बड़ी नदियाँ—सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र में